संत साहित्य का काव्य सौष्ठव

राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 नवम्बर 2015

पंजीयन प्रपत्र

नाम _____

पद _____

संस्था _____

_____

शोधपत्र का शीर्षक _____

_____

पंजीयन शुल्क

- शिक्षक – 800 रु. शोध छात्र व अन्य – 500 रु.
- प्रतिभागी अपने रहने/ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

स्वागत समिति

डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. रेणु व्यास	डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. मंदाकिनी मीणा	डॉ. गीता सामौर
डॉ. वीरेन्द्र सिंह	डॉ. अर्जुन सिंह
डॉ. कैलाश पंवार	विशाल विक्रम सिंह
श्रुति शर्मा	अनिता रानी
तारावती मीणा	वर्षा वर्मा
सुंदरम शांडिल्य	

प्रेषक

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग एवं समन्वयक, दादू अध्ययन प्रकोष्ठ

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004

मो. 9950997599 ई–मेल : vinoddr68@gmail.com

प्रति,

_____

_____

_____

बुक-पोस्ट

संत साहित्य का काव्य सौष्ठव

राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 नवम्बर 2015

संत साहित्य का काव्य सौष्ठव

राष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 नवम्बर 2015

संरक्षक

स्वामी रामसुखदास

दादूपंथी साहित्य शोध संस्थान, जयपुर

सह–संरक्षक

प्रो. अनिल जैन

मो. 9414209229

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

समन्वयक, दादू अध्ययन प्रकोष्ठ

मो. 9950997599, 7597530500

आयोजन सचिव

डॉ. करतार सिंह

मो. 9414795184

आयोजक

दादू अध्ययन प्रकोष्ठ, हिन्दी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004

संत साहित्य का काव्य सौष्ठव

भक्ति आंदोलन मध्यकाल की युगान्तरकारी परिघटना थी जिसने भारतवर्ष को एक समग्र राष्ट्र के रूप में नई पहचान दिलाई। दक्षिण में आलवार-नायनार भक्तों द्वारा उद्भूत यह आंदोलन रामानंद के माध्यम से उत्तर में पहुंच कर निर्गुण-सगुण काव्यधाराओं में विकसित हुआ। यह एक विराट सांस्कृतिक आंदोलन था जिसने धर्म, दर्शन, कला, भाषा, साहित्य एवं संस्कृति सभी को गहरे प्रभावित किया। भक्ति आंदोलन ने संस्कृति और साहित्य को सामंतवाद की जकड़ से बाहर निकाल कर जन संस्कृति की ओर उन्मुख किया तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में निम्न कही जाने वाली जाति और वर्ग के लोगों को नेतृत्व प्रदान किया। संत मत का प्रवर्तन हुआ और कबीर, नानक, रैदास, सेना, पीपा, सदना, धन्ना, दादू दयाल आदि संत कवि जनसामान्य की प्रेरणा का केन्द्र बने।

संत साहित्य का लक्ष्य था 'मानुष सत्य' यानी मनुष्यत्व की रक्षा और विकास। संत कवियों की दृष्टि में 'मानुष सत्य' से ऊपर कुछ भी नहीं था। संत कवियों ने कुल, जाति, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय पर आधारित सभी भेदभावों की निन्दा की तथा धार्मिक पाखण्ड एवं कर्मकाण्डों पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने प्रेम व भाईचारे से युक्त एक ऐसे समाज की पीठिका रची जिसमें हिन्दी और मुसलमान समान रूप से शामिल थे।

संत साहित्य ने पहली बार भारतीय समाज में तथाकथित निम्न जातियों को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। यद्यपि पूर्व में सिद्धों और नाथों के साहित्य में यह प्रवृत्ति मौजूद थी किन्तु संत कवियों ने ज्ञान में प्रेम तत्त्व का समावेश किया। यह संत साहित्य ही था जिसने श्रम और कर्म केन्द्रित सौन्दर्य की स्थापना की। ईश्वर तक अर्जी पहुंचाने का अब तक जो एकमात्र माध्यम संस्कृत थी, उसके स्थान पर लोक भाषाओं में जनता ने अपना सुख-दु:ख ईश्वर के समक्ष पहली बार व्यक्त किया। संत कवियों ने इस संदर्भ में अभिजात वर्ग की इजारेदारी को निर्णायक रूप से खत्म किया तथा परम्परागत काव्य प्रतिमानों को चुनौती देते हुए सर्वथा नवीन सौन्दर्य चेतना का प्रसार किया। जनता को अपनी 'बानियों' से सम्बल प्रदान करने वाले इन संतों ने काव्य की अन्तर्वस्तु और काव्यभाषा में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये, लेकिन पारम्परिक काव्यशास्त्र के मानदण्डों के अनुसार इनके काव्यत्व पर प्रश्न चिह्न भी लगाए गए हैं, मसलन- विचारों का दोहराव, शुष्क साधनात्मक शब्दावली, अति दार्शनिकता, दुरूह प्रतीक योजना, परिमार्जित भाषा का अभाव, छंदों का पिंगलशास्त्र के अनुकूल न होना।

संत कवियों के सामने साहित्यिकता का कोई शास्त्रीय मानदंड नहीं था। उन्होंने सर्वथा भिन्न प्रकार के साहित्य का सृजन किया जो जनसाधारण को सम्बोधित था। धर्म और दर्शन उनके प्रिय विषय थे जिसे उन सृजनधर्मी संत कवियों ने जन भाषा में सहज सम्प्रेषणीय बनाया। उनकी संधा भाषा उनके छंदगत भावों को वहन करने में पूरी तरह समर्थ थी। अत: भाषा सौन्दर्य के मान्य सिद्धान्तों को उन पर लागू नहीं किया जा सकता। संत काव्य की प्रभावशीलता इतनी व्यापक रही कि कला के तत्त्व-अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि उनकी रचनाओं में स्वत: समाविष्ट हो गए।

संतों के काव्य को कृत्रिम अलंकरण की आवश्यकता कभी अनुभव नहीं हुई। संत कवियों ने विविध छन्दों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। संत साहित्य में त्रोटक, पवंगम, भुजंगी, पद्धरी, गीतक, कुंडली, हंसाल, दुर्मिल, नराच, बिज्जूमाला, चंद्रायणा, अरिल्ल आदि छंद प्रयुक्त हुए हैं। साखी संत कवियों का प्रिय छंद है। कबीर, रैदास, दादू, नानक, रज्जब, गरीबदास, सुन्दरदास, मलूकदास, दरिया साहब आदि संतों की साखियां बहुत प्रसिद्ध हैं। दादूपंथ के संतों में प्रह्लाददास, राघवदास, चम्पाराम उल्लेखनीय हैं। संत साहित्य में 'सबद' या 'सबदी' तथा 'पद' का भी प्रयोग मिलता है। वस्तुत: संगीत की दृष्टि से गेय और विभिन्न राग-रागिनियों में निबद्ध पदों की रचना संत कवियों ने बहुत की है।

संत कवियों की भाषा लोकभाषा है जिसमें विभिन्न क्षेत्रों एवं वहां की भाषाओं में प्रचलित शब्दों का समावेश है। संतों की भाषा को कबीर ने 'बहता नीर' के समान गतिशील एवं निर्बन्ध बताया है जिसे अवधी, ब्रज, भोजपुरी, राजस्थानी, पंजाबी आदि भाषाओं का मिला-जुला रूप प्रभावी बनाता है।

संत काव्य अपने भाव पक्ष के लिए सदा ही समादृत रहा है। आधुनिक काल में जब रीतिकालीन अलंकरणों को काव्य जगत में गर्हित माना जा रहा है तब संत काव्य की सादगी और सम्प्रेषणीयता एक साहित्यिक मूल्य के रूप में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के अन्तर्गत संचालित दादू अध्ययन प्रकोष्ठ के तत्त्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य संत काव्य के साहित्यिक सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों के महत्त्व को रेखांकित करना है।

प्रस्तावित विषय

- भक्ति आन्दोलन और संत साहित्य
- संत साहित्य और लोक चेतना
- संत साहित्य के सामाजिक संदर्भ
- संत कवियों का सौन्दर्य बोध
- संत कवियों द्वारा प्रयुक्त काव्य रूप
- संत साहित्य का भाषा सौष्ठव
- संत काव्य में प्रतीक योजना
- संत साहित्य में शैली तत्त्व
- संत काव्य में अलंकार योजना
- संत काव्य में छंद योजना
- संत साहित्य और संगीत
- दादू पंथी साहित्य का काव्य सौष्ठव
- संत दादू दयाल की काव्य कला
- संत जगजीवनराम की काव्य चेतना
- संत सुन्दरदास की काव्य कला
- संत निश्चलदास का काव्य सौन्दर्य
- संत रज्जब का काव्य सौन्दर्य
- गुरुपद प्राप्त पोथियों का वैशिष्ट्य
- सरबंगी ग्रंथों का रचना विधान